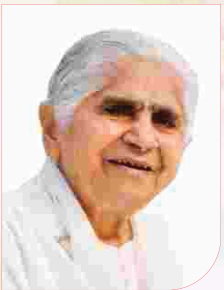

## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञानामृत पत्रिका, आत्माओं को प्रभु-सन्देश देने की सेवा करते हुए स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश हो गई है।

जब बाबा साकार में थे तब 'ज्ञानामृत' पत्रिका 'त्रिमूर्ति' के नाम से प्रारंभ हुई थी। 'ज्ञानामृत' नाम बाद में पड़ा है। अति स्नेही मातेश्वरी जी के देह-त्याग के बाद एक दिन मैं उनके कमरे में बैठी थी, 'त्रिमूर्ति' मेरे हाथ में थी, बाबा आये और पूछा, बच्ची, क्या कर रही हो, पढ़ रही हो? मैंने कहा, हाँ बाबा, मैगज़ीन पढ़ रही हूँ, कोई पूछे इसमें क्या है तो मुझे पता तो होना चाहिए ना। यह सुनकर बाबा ने बहुत प्यार किया। ज्ञानामृत में लिखने वालों की कलम कमल समान हो गई है। ज्ञानामृत कितना सुख देती है! मैंने कोई ज्ञानामृत नहीं छोड़ी होगी। त्रिमूर्ति पत्रिका में एक बार जगदीश भाई (प्रथम मुख्य संपादक) के लेख में पढ़ा था, 'सच्चाई, सफाई, सादगी'। मुझे अभी तक याद है वो पत्रिका, पूना के छोटे-से सेवाकेन्द्र में जब मैं थी तब वो पढ़ी थी। बाबा कहता है, बच्चों को मैगज़ीन अवश्य पढ़नी चाहिए, पढ़ना भी आगे बढ़ना है।

स्वर्ण जयन्ती विशेषांक के लिए ज्ञानामृत की सेवा से जुड़े सभी भाई-बहनों को दिल से दुआएँ और बधाई देती हूँ, उनकी अथक सेवा से जन-जन के दिल में ज्ञानामृत की धारा यूँ ही बहती रहे, सर्व को पावन करती रहे और एक दिन यह धरा भी स्वर्णिम बन जाए। पुन: दिल की दुआएँ और बधाई।

**राजयोगिनी दादी जानकी**
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मेरी अनुभूतियाँ

## बोध कराती है कथाओं के मर्म का

आज से पचास वर्ष पूर्व आध्यात्मिक ज्ञान की झंकार करती हुई 'ज्ञानामृत' का जन्म हुआ। पचास वर्षों के इस सफर में ज्ञानामृत ने अपने बदलते रूप-रंग द्वारा विविध विधाओं और आयामों द्वारा पाठकों के हृदय में अपना एक अनूठा स्थान बना लिया है। सबकी चहेती ज्ञानामृत का पाठक बेसब्री से इंतजार करते हैं। अपनी गुणवत्ता, सारगर्भिता और विश्वसनीयता से इसने अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध किया है। पाठकों को बांधे रखा है। इस बहुरंगी मासिक पत्रिका ने सचमुच पठनीयता को बढ़ावा दिया है। इसकी श्रेष्ठता का कारण इसके लेखों की मौलिकता और प्रभावशीलता है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को अलग-अलग सुर-ताल में लयबद्ध करते हुए ज्ञानामृत का गुंजन आत्माओं की चेतना को झंकृत कर रहा है। यह धर्म-कर्म की व्याख्या और कथाओं के मर्म का बोध कराती है। चिंता, तनाव और व्यसनमुक्त जीवन जीने के लिये, संबंधों में सुसंवादिता लाने के लिए, गुणों से जीवन का शृंगार करने के लिए, तन और मन का उत्तम स्वास्थ्य पाने के लिए और सार्थक जीवन जीने के लिए ज्ञानामृत सर्वोत्तम सहज और सुलभ मासिक है। ज्ञानामृत नित नये रूप-रंग और सज्जा के साथ समस्त जनमानस का ज्ञानवर्धन और आत्मरंजन करती रहेगी और पचास वर्षों में इसने जो जन चेतना जगाई है उसका गुंजन चारों ओर बढ़ता ही रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। पुन: कोटि-कोटि बधाइयाँ।

➢ **ब्रह्माकुमार अशोक,**
ससाणेनगर, हडपसर, पूणे

## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञान अमृत का पान कराने वाली यह ''ज्ञानामृत मासिक पत्रिका'' जन-जन के जीवन को अमरत्व प्रदान करते हुए अपनी यात्रा के 50 वर्ष पूरे कर अभी स्वर्णिम जयन्ती वर्ष में प्रवेश कर रही है।

यह पत्रिका साकार पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जगदम्बा माँ और वरिष्ठ दादियों के दिव्य वरदानों से आलोकित है, उनकी प्रेरणाओं से ओत-प्रोत है। इसे पहले-पहले ''त्रिमूर्ति पत्रिका'' के नाम से प्रकाशित किया गया। हमारे आदरणीय भ्राता जगदीश जी की अथक मेहनत, बुद्धि की दिव्यता व विशालता से यह पत्रिका दिनोंदिन सबकी चाहत बनती गई। जिसने भी इसे पढ़ा, सुना उसने सहज अपना लिया। इसकी सरल, सुगम, मधुर भाषा अनेक गूढ़ रहस्यों को सहज उद्घाटित कर देती है। देश-विदेश के लाखों भाई-बहनें इसे पढ़ते, ज्ञान के अनमोल हीरे-मोती स्वयं में संजोते और आनंदित होते रहते हैं।

पूरा दैवी परिवार तथा सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली अनेकानेक आत्मायें ''ज्ञानामृत पत्रिका'' के माध्यम से आध्यात्मिक मार्ग में स्वयं की उन्नति करते हुए ईश्वरीय सेवाओं के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहते हैं।

मैं इस अद्भुत प्रेरणादायी ज्ञानामृत का नित्य पाठ करने वाले सभी पाठकों को तहेदिल से बधाइयां देती हूँ। साथ-साथ अपने स्नेही आत्मप्रकाश भाई, उर्मिला बहन तथा पूरे सम्पादकीय परिवार को, सुन्दर-सुन्दर विषयों पर विचार व्यक्त करने वाले मनन-चिंतनशील लेखक भाई-बहनों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ जिनकी अथक मेहनत से यह पत्रिका ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सेवाओं की प्रगति में चार चांद लगा रही है।

हमारी यह शुभ भावना है कि विश्व की हर एक अध्यात्म प्रेमी, प्रभु प्रेमी आत्मा के हाथों में यह ज्ञानामृत पत्रिका शीघ्र से शीघ्र पहुंचे ताकि उन्हें दिव्यता व सत्यता के मार्ग पर सतत् चलने के लिए आत्मबल मिलता रहे और वे आने वाली स्वर्णिम दुनिया में भी अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कर सकें।

**राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी**
सह मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

**मेरी अनुभूतियाँ**

### ज्ञानामृत ने बनाया लेखक और वक्ता

जब ज्ञानामृत में लेख लिखने शुरू किये तब एक लिखा, दूसरा लिखा, तीसरा लिखा, ऐसे करते-करते 25 लेख लिखे और विचार सागर मंथन चालू हो गया। मुझे अन्दर से खुशी होने लगी। एक बार सम्पादक जी से मधुबन में मुलाकात हुई। उन्होंने पूछा, आपका एक भी लेख नहीं छपा, आप नाराज तो नहीं होते हो? मैंने कहा, भाई साहब, मुझे खुशी हो रही है, मेरा विचार सागर मंथन चलना शुरू हो गया है। लेख छपे या न छपे, उसकी कोई परवाह नहीं, मेरी हिन्दी भाषा अच्छी हो रही है।

इसके बाद एक लेख छपा, मुझे बहुत खुशी हुई। इसके बाद तो लेख छपते रहे। ज्ञानामृत के बाद अन्य मासिक पत्रिकाओं एवम् कुछ अखबारों में भी लेख लिखने शुरू किये। अब तक लगभग 2000 से भी अधिक लेख लिखे होंगे। ज्ञानामृत का बहुत-बहुत आभार मानता हूँ इसने मुझे लेखक और वक्ता बनाया।

➢ **ब्रह्माकुमार भगवान भाई, शान्तिवन**

## शुभकामना संदेश

50 स्वर्ण जयन्ती

मुझे यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि बहन-भाइयों द्वारा देश-विदेश में विशेष रुचि से पढ़ी जाने वाली ज्ञानामृत पत्रिका जन-जन की सेवा करते हुए स्वर्णजयन्ती वर्ष में प्रवेश कर गई है।

अनेक आत्माओं की मन-बुद्धि को पारस सम बनाने में इस पत्रिका का काफी बड़ा योगदान है। जैसे अलौकिक जन्म लेते ही मुरली का रसपान आत्मा करने लगती है वैसे ही बापदादा के वरद् हस्तों से प्रारम्भ हुई 'ज्ञानामृत' के ज्ञान का पान भी प्रारम्भ हो जाता है।

इसमें छपे ज्ञान के गहन मनन चिन्तन के लेखों से ब्रह्मावत्स स्वउन्नति करते हैं और इसमें छपे देश-विदेश के सेवा समाचारों से नए-नए लोग बाबा के करीब आने की प्रेरणा पाते हैं।

ज्ञानामृत पढ़ते-पढ़ते कभी तो ईश्वरीय प्रेम में नयन भीगते हैं और कभी खुशी की सिहरन सारे शरीर में दौड़ जाती है। कभी आत्मा विदेही बन शिवपिता की किरणों रूपी बाँहों में जा विश्रामी बनती है तो कभी विश्व के गोले पर खड़ी हो शान्ति का प्रवाह देने लगती है। कभी उसमें उत्साह का उद्रेक उठता है और कभी करुणा की सरिता कल-कल कर बहने लगती है। इस प्रकार यह साहित्य के नौ रसों में अवगाहन कराती हुई दसवें रस अतीन्द्रिय रस की ओर अग्रसर कर देती है।

इसका अध्ययन कर समय सफल होता है, उनींदे को नींद आती है, आलसी को उठकर खड़े होने की प्रेरणा मिलती है, अपव्ययी मितव्ययी बन जाता और कंजूस में दानशीलता जाग जाती है। इस प्रकार यह स्वभाव में परिवर्तन ला मानव की सोई दिव्यता को जगा देती है।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष में यह और अधिक लोगों के दिल-मन को स्वर्णिम युग की ओर आकर्षित करे, पारसनाथ बाबा के ज्ञान का साक्षात्कार सभी को कराकर, सभी को लोहे से सोने जैसा बना दे, यही हार्दिक शुभकामना है।

**राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी**
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

वाह ज्ञानामृत वाह

## मेरी अभिव्यक्ति शक्तिशाली हो गई

मैं पिछले 20 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में चल रही हूँ। साधारण परिवार की होने के कारण ज्यादा शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाई अत: बाबा के घर समर्पित होने के बाद मैं सोचती थी कि आखिर कौन-सी सेवा करूँ।

मुझे जन-जन को ज्ञान सुनाने का बहुत शौक था अत: मैं लोगों के घरों में बाबा का संदेश सुनाकर उन्हें ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने के लिए देने लगी। इससे जनता के बीच ज्ञान के प्रति बहुत ही श्रद्धा व प्रेम बढ़ने लगा तथा कई भाई-बहनें बाबा को पहचान उनके वर्से के हकदार बन गए। ज्ञानामृत के प्रचार-प्रसार से मेरी अभिव्यक्ति और शक्तिशाली होती गई और मेरे द्वारा ज्ञानामृत का लाभ पाने वाले सदस्यों की संख्या 600 से ऊपर हो गई। मैं गाँव-गाँव जाकर एक ही कार्य करती हूँ ज्ञानामृत दान, इससे ईश्वरीय सेवाएँ भी बढ़ रही हैं। अन्त में यही कहूँगी –

बहुत ही अनोखी है ज्ञानामृत पत्रिका,
सबके दिलों में विराजी है ये पत्रिका,
जादू भरा है प्रभु प्यार का जिसमें,
प्रभु से मिलाती है, प्यारी पत्रिका।।

➢ **ब्रह्माकुमारी हेमलता, सेमरिया (रीवा)**

## शुभकामना संदेश

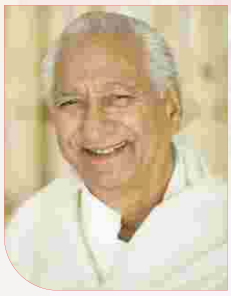

बहुत ही हर्ष का विषय है कि स्थापना काल में पिताश्री ब्रह्मा बाबा और आदि देवी जगदम्बा सरस्वती का दिव्य मार्गदर्शन पाने वाली और उच्च कोटि के आध्यात्मिक चिन्तक, लेखक, वक्ता तथा प्रथम सम्पादक भ्राता जगदीश जी के सम्पादन से नित नए विचारों को प्रवाहमान करती हुई ज्ञानामृत पत्रिका ने स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश किया है। इस अवसर पर मैं सम्पादक भ्राता आत्मप्रकाश, उर्मिला बहन तथा प्रकाशन में उनके सहयोगियों को कोटि-कोटि हार्दिक बधाइयाँ देता हूँ।

आध्यात्मिक विचारों, अनुभवों, समाचारों और अन्य साहित्यिक रचनाओं द्वारा आत्मा को पुष्ट करने वाली यह पत्रिका भौतिकता प्रधान वातावरण में अध्यात्म का आलोक बिखेरती है। धरती पर अवतरित परमात्मा पिता के दिव्य चरित्रों का साक्षात्कार कराने के साथ-साथ समाज के विभिन्न वर्गों को अध्यात्म रूपी लिफ्ट देकर निर्विघ्न रूप से आगे बढ़ाते हुए स्वर्णिम दुनिया तक ले जाना इसका लक्ष्य है।

समय की तेज़ गति के साथ अपने रूप-स्वरूप का समायोजन बनाते हुए यह और अधिक प्रगति करे तथा इसकी संख्या कई गुणा होकर यह हर घर में ज्ञान प्रकाश फैलाए, यही मेरी शुभकामना है। पुन: स्वर्ण जयन्ती की कोटि-कोटि बधाइयाँ स्वीकार करें।

**ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई**
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

मेरी अनुभूतियाँ

## सर्व धर्मों को सम्मान देने वाली

'ज्ञानामृत' पत्रिका में छपे भाई-बहनों के अनुभव प्रमाणित करते हैं कि स्वयं ईश्वर पृथ्वी पर आकर सतयुग की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। इसका नियमित पठन मन-बुद्धि को ताज़ा व धारदार बनाए रखता है। 'ज्ञानामृत' प्रति माह हो रही ईश्वरीय सेवा को दिखलाने का एक झरोखा है, ज्ञान रत्न लुटाने की एक ज्ञान-मंजूषा है, एक गागर है, सागर (शिव) के जल को घर-घर तक पहुँचाने की।

इसका कागज़ी मूल्य तो कम है परन्तु यह 'काग' को 'हंस' बनाने वाली अमूल्य निधि है। भक्ति का फल है 'ज्ञान', तो 'ज्ञानामृत' का फल है 'आपसी प्रेम'। यह पत्रिका उड़ती कला का वरदानी बनने में सहायक है। इसने अनेक आत्माओं का जीवन संवारा है क्योंकि इसे बापदादा का वरदानी हाथ प्राप्त है। यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की एक सन्देशवाहक बन गई है, जो कबूतर की तरह उड़ कर दूर-दराज तक पहुँचती है और पाठक के हाथ में आते ही उसके मुख पर मुसकान बिखेर देती है।

सांसारिक पत्रिकाएँ विज्ञापनों व माया के पॉम्प से चलती हैं परन्तु ज्ञानामृत तो त्याग, तपस्या व सेवा के बल से चलती है। वर्तमान समय इस जैसी सस्ती व श्रेष्ठ छपाई वाली अन्य कोई पत्रिका है नहीं। इसमें व्यक्त उच्चस्तरीय विचार और इसकी सरल, सुगम भाषा इसे सभी समकालीन पत्रिकाओं में विशेष स्थान दिलाते हैं। यह विश्व की एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसे दूसरे धर्म-अनुयायियों ने सम्मान की दृष्टि से देखा है, प्रतिस्पर्धा की भावना से नहीं क्योंकि इसने सभी धर्मों का सम्मान किया है। यह कभी समय की परिधि में नहीं बंधी। इसमें छपे लेख कभी पुराने नहीं पड़ते। यही कारण है कि पुरानी ज्ञानामृत पत्रिका जब नये लोगों की सेवा में बांटी जाती है, तो यह उनमें उतनी ही चेतना जगाती है जितनी कि नये माह की ज्ञानामृत।

➢ **ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरपुर**

## शुभकामना संदेश

बड़े हर्ष की बात है कि बापदादा की प्रिय पत्रिका ज्ञानामृत का स्वर्णजयन्ती वर्ष चल रहा है, इस अवसर पर सभी को दिल से बहुत-बहुत बधाइयाँ।

हम सब जानते हैं, दो प्रकार की वृद्धि होती है। उनमें से एक है नारियल के वृक्ष की तरह जो ऊपर की ओर होती है और दूसरी बेलों की तरह है जो चारों ओर धरती पर फैलती हैं। ज्ञानामृत की दोनों प्रकार से वृद्धि हुई है। एक तरफ इसकी संख्या सवा तीन लाख तक पहुँच गई है और दूसरी तरफ कई प्रादेशिक भाषाओं जैसे नेपाली, गुजराती, बंगाली, कन्नड़, मराठी आदि में भी भिन्न नाम से पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी हैं। इन सबका बीज ज्ञानामृत ही है। इसके लिए आत्मप्रकाश भाई, उर्मिला बहन और उनकी टीम को खूब-खूब बधाई है।

एक बार सिंगापुर में मैं एक पत्रिका देखने गया। मुझे बताया गया कि 150 पेज की चार रंगों वाली पत्रिका की 3 या 4 लाख प्रतियाँ वे एक दिन में छाप देते हैं। आजकल इतना विकास हो चुका है। अब हम भी अपना कारोबार इतना ही फास्ट करें।

ज्ञानामृत प्रेस और उसके निमित्त सभी भाई-बहनें यज्ञ की अनेक प्रकार की सेवाओं में सहयोगी बनें, तो बहुत अच्छा होगा। मैं शुभेच्छा देता हूँ कि यज्ञ का कारोबार यूँ ही बढ़ता रहे और ज्ञानामृत का कारोबार भी इतना बढ़े कि इसकी प्लेटिनम जुबली आने तक विश्व की नामी-गिरामी पत्रिकाओं में इसकी गिनती होने लगे।

एक समय में इल्लस्ट्रेटिड वीकली तथा धर्मयुग का बहुत नाम था। इनमें लेख छपना बड़ी बात होती थी पर अब ये बन्द हो चुके हैं। खुशवन्त सिंह इल्लस्ट्रेटिड वीकली के सम्पादक थे। उन्होंने अपने सहयोगियों को पाण्डव भवन में भेजा था। वे बाबा के फोटो के साथ-साथ अन्य भी कई फोटो यहाँ से लेकर गए थे। उस पत्रिका के कवर पेज पर पत्र लिखते हुए बाबा का फोटो छपा था। अन्दर भी कई बातें छपी थी। उसमें एक किचन का फोटो डाला गया था जिसमें भोली दादी कढ़ाई में कुछ तल रही थी। मैंने पूछा, इसका क्या महत्व है। खुशवन्त सिंह ने कहा, आपकी संस्था में किचन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि आप बाहर का पका हुआ तो खाते नहीं हो, आप सबके जिन्दा रहने का आधार ही यह है।

दूसरा एक फोटो शान्तिस्तम्भ के सामने इन्द्रप्रस्थ के निर्माणाधीन भवन का था जिसमें मिस्त्री ईंटें लगा रहा था। मैंने कहा, इसके बदले तो किसी कार्यक्रम का फोटो ज्यादा अच्छा रहता। उन्होंने कहा, दुनिया में कार्यक्रम तो बहुत होते रहते हैं। उन्होंने उस फोटो के नीचे कैप्शन लिखा, 'सदा ही विकास को प्राप्त होती रहने वाली संस्था।'

ज्ञानामृत पत्रिका भी नए-नए ढंग से छपती रहे, सबको प्रेरणा देती रहे, बापदादा और दादियों का नाम रोशन करती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

**ब्रह्माकुमार रमेश शाह**
अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

### मेरी अनुभूतियाँ — लेख छोटे, अर्थ विशेष

ज्ञानामृत का एक-एक अनुभव अपने भीतर एक अथाह सागर समेटे हुए है। छोटे-छोटे लेखों में भी बहुत विशेष अर्थ भरा होता है। इनको पढ़ने में समय भी अधिक नहीं लगता और इन्हें दिल में उतारने में भी कोई मेहनत नहीं होती। विविध विषयों से सम्बन्धित ये सार रूप बातें सबके लिए हर समय उपयोगी हैं। मैं ज्ञानामृत के अमृत बिन्दुओं की फुहार से अपने जीवन को सरस, सुखद एवं सफल बना रहा हूँ।

➢ **ब्रह्माकुमार रामकुमार, रेवाड़ी**

## शुभकामना संदेश

मेरा इस पत्रिका से पुराना संबंध है। मार्च, 1957 में ब्रह्मा बाबा की प्रेरणा से हमने दिल्ली में ब्रह्माकुमारीज़ की पहली हिन्दी पत्रिका 'त्रिमूर्ति' मासिक के नाम से शुरू की थी। हमारे बड़े दैवी भ्राता जगदीश चंद्र हसीजा जी इसमें लेख लिखते थे, मैं कविता लिखता था और इसे प्रकाशित करता था। दिसंबर, 1957 में मैंने फर्टीलाइजर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, भाखड़ा नंगल, पंजाब में चार्टर्ड एकाउंटेंट के रूप में सर्विस प्रारंभ की। वहाँ से भी मैं इस पत्रिका को दो वर्ष तक चलाता रहा। बाद में इसे बंद करना पड़ा क्योंकि यह दिल्ली की एक प्रेस में छपती थी। बाइंडिंग दूसरी जगह होती थी, पोस्टिंग तीसरी जगह से होती थी। कागज़ एक जगह से खरीदना होता था और टाइटल के लिए आर्ट पेपर दूसरी जगह से खरीदना होता था। यह सारा कार्य मैं किया करता था जो नंगल जाने के पश्चात् कठिन होता जा रहा था। किंतु लक्ष्य यही रहा कि दुबारा पत्रिका निकाली जाये।

उसके पश्चात् मार्च, 1965 में हमने 'ज्ञानामृत' पत्रिका को उसके अगले अवतार के रूप में प्रकाशित करना प्रारंभ किया। नाम इसलिए बदलना पड़ा कि 'त्रिमूर्ति' नाम किसी दूसरे प्रकाशक ने ले लिया था। तब भ्राता जगदीश जी ने कहा कि व्यस्तता के कारण कुछ लेख तो वे लिखेंगे किंतु मैं अन्य योग्य लेखकों से पत्र-व्यवहार करके उनसे लेख लिखवाऊँगा। मैं नंगल से पत्र-व्यवहार द्वारा यह कार्य करता रहा।

जुलाई, 1971 में भ्राता जगदीश जी को 15 मास के लिए विदेश जाना पड़ा। उन्होंने मुझे कहा कि उनके पीछे 'ज्ञानामृत' की पूरी ज़िम्मेवारी आपकी है। बाबा की मदद से मैं नंगल से ही संपादकीय लिखकर और अन्य लेखकों से प्रकाशन सामग्री इकट्ठी करके पत्रिका को नियमित रूप से छपवाता रहा।

आज इस पत्रिका की हर महीने सवा 3 लाख प्रतियाँ छपती हैं। इसका सारा स्टाफ पूरी लगन से सेवा करता है। आबू रोड जैसे छोटे शहर से भी इसे नियमित रूप से पोस्ट किया जाता है जहाँ मेलिंग सुविधायें बड़े शहरों जैसी नहीं हैं।

मुझे अति प्रसन्नता है कि मासिक ज्ञानामृत पत्रिका अब अपने 50वें वर्ष में प्रवेश कर रही है और इस अवसर पर स्वर्ण जयन्ती विशेषांक भी प्रकाशित किया जा रहा है। मेरी हार्दिक शुभकामना है कि यह पत्रिका दिनों-दिन वृद्धि को प्राप्त हो। इसके सुचारु रूप से प्रकाशन के पीछे जो समर्पित भाव से कार्य करने वाले बहन-भाई हैं, उन्हें मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

**ब्रह्माकुमार बृजमोहन**
अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

मेरी अनुभूतियाँ

## सोच हुई सकारात्मक

ज्ञानामृत के नियमित पठन से मुझमें जीवन जीने की कला आ गई। जिन फालतू बातों का चिंतन किया करता था वो अब नहीं रहीं। अब सोच सकारात्मक हो गई है। एक चमत्कार यह हुआ कि मेरा बी.पी. भी नार्मल रहने लग गया है। इसे पढ़ने से मुझे अच्छे व बुरे कर्म की भी समझ मिली है। अब बाबा की दुआ से मेरे सब कार्य अच्छे हो गये हैं। अगर इसमें दिये लेखों को सभी दिल से पढ़ें और जीवन में उतारें तो एक अच्छा समाज बन जाएगा।

➢ पवन कुमार, बड़ौत (बागपत) उ.प्र.

## शुभकामना संदेश

ज्ञान योग सागर भगवान शिव द्वारा ब्रह्मा मुख से उच्चारित ज्ञान बिन्दुओं का अमृतपान कराने वाली ज्ञानामृत पत्रिका अपनी सफल यात्रा के 50वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है, यह बहुत हर्ष का विषय है।

ऊंचे, महान विचारों की प्रबल प्रेरक और जन-जन की चहेती इस पत्रिका की मांग विश्व के कोने-कोने में बढ़ रही है। इसके हर अंक में मूल्यों की, राजयोग की, दिव्य व्यवहार की सरल और स्पष्ट व्याख्या होती है जिससे पाठकों को समाधान मिलते हैं और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं। निर्मल मन, निर्मान भाव और दातापन की स्थिति बनाने तथा जीवनमुक्ति के सरल पथ की ओर ले जाने का यह पत्रिका अति उत्तम साधन है।

पत्रिका की स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर मैं इसके सम्पादक, प्रकाशक तथा वितरण से जुड़े सभी भाई-बहनों को हार्दिक बधाई देती हूँ और शुभकामना करती हूँ कि जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देती हुई यह पत्रिका मानव को देवतुल्य बनाने की सेवा में और भी तीव्रगति से आगे बढ़े। पुन: स्वर्ण जयन्ती की कोटि-कोटि बधाई!

**ब्रह्माकुमारी मुन्नी बहन**
कार्यक्रम निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़

वाह ज्ञानामृत वाह

## परिवार बना कलह-मुक्त

मैं पिछले 17 वर्षों से बाबा के ज्ञान में चल रही हूँ। बाबा को बार-बार शुक्रिया कि बाबा ने मुझे एक ऐसा अनोखा रूहानी अस्त्र दिया है जिससे मैं सभी उच्च पदासीन व्यक्तियों की सेवा करने में सक्षम हो गई हूँ। पहले मैं बहुत डरती थी, सहमी-सहमी रहती थी लेकिन अब जब से ज्ञान में आई व ज्ञानामृत के लेखों को पढ़ने लगी तो भयमुक्त हो गई।

हर गांव, गली में लोगों को बाबा की याद में यह ज्ञानामृत पढ़ने को देती हूँ। प्रथम भेंट में यदि कोई स्वीकार न करे तो भी मैं बड़े प्यार से बाबा की याद में ज्ञानामृत के पन्ने खोलकर जब सुनाने लगती हूँ, तो व्यक्ति नतमस्तक हो जाते हैं और बाद में पत्रिका की भूरि-भूरि प्रशंसा कर सहयोगी बन जाते हैं।

एक बार एक भाई साहब को तीन माह तक पत्रिका देती रही लेकिन वे मुझे लौटाते रहे कि मुझे नहीं पढ़नी। मैं उनके यहाँ फिर भी जाती रही। चौथे मास उनके ही घर में बाबा की पत्रिका के लेख उन्हें पढ़कर सुनाए। अब वे नियमित सदस्य भी हैं और बाबा की सेवा में बहुत मददगार बन गये हैं।

मुझे अपने पारिवारिक सदस्यों से अति दुख होता था। मन ही मन बाबा से कहती थी, बाबा, लोग कहेंगे कि इतनी ईश्वरीय सेवा करती है पर घर के लोग तो खुश रहते नहीं। फिर भी मैंने ज्ञानामृत बांटना बंद नहीं किया। जिनके निमित्त बनाया है उन सदस्यों की संख्या 400 से भी ज्यादा है। इस सेवा के फलस्वरूप मेरे परिवार के सदस्यों की कलह स्वत: समाप्त हो गई। ये भी सेवा की दुआएँ हैं। अंत में यही कहूँगी –

बाबा आपकी है कमाल,
ज्ञानामृत जैसी कोई नहीं मिसाल।

➢ **ब्रह्माकुमारी श्यामवती, रीवा**

## शुभकामना संदेश

जब त्रिमूर्ति पत्रिका निकलती थी तब उसकी सेवा का सुअवसर मुझ आत्मा को भी मिला। फिर ज्ञानामृत नाम से पत्रिका का नामांकन हुआ। दिनों-दिन उन्नति के शिखर पर जाते आज यह प्रभु प्यारी पत्रिका अपनी स्वर्ण जयन्ती में प्रवेश कर रही है। इसकी सेवाओं को बढ़ाने का श्रेय सम्पादक भ्राता आत्मप्रकाश जी तथा सहयोगी बहन-भाइयों को जाता है और मैं हृदय की गहराइयों से सभी को मुबारक देना चाहूँगी। भविष्य के लिए मैं यही आशा करती हूँ कि यह ज्ञानामृत पत्रिका बहुतों की हृदय सम्राट बन उन्हें शिवबाबा के वर्से का अधिकारी बनायेगी।

एक बार पुन: ज्ञानामृत पत्रिका की स्वर्णजयन्ती के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

**ब्रह्माकुमारी चक्रधारी,**
अध्यक्षा, महिला प्रभाग

## स्वच्छ छवि बनाने की प्रेरणा

मैं एक सरकारी कर्मचारी हूँ, विभिन्न प्रकार की कार्यप्रणालियों और कर्मचारियों से मेरी प्रतिदिन मुलाकात होती है। उन सभी के बीच रहते हुए अपनी स्वच्छ छवि किस प्रकार बनानी है, इसकी प्रेरणा मुझे ज्ञानामृत के हर लेख से मिलती है। हर लेख एक ''डोज'' का कार्य करता है जिससे तन-मन स्वस्थ रहता है। हर ''समस्या'' का निवारण मिलता है। स्वयं की हर कमी, कमज़ोरी को महसूस कर उसे निकालने का बल मिलता है। प्रत्येक दिन बाबा, परिवार, मधुबन की समीपता का अनुभव होता है। स्वयं को एक अच्छा इन्सान, परमात्मा का वफ़ादार बच्चा बनने की प्रेरणा मिलती है।

➢ **ब्रह्माकुमारी प्रीति खत्री,**
मालवीय नगर, जयपुर

**वाह ज्ञानामृत वाह**

## हर मर्ज की दवा

ज्ञानामृत दो शब्दों का समूह है – ज्ञान + अमृत (अर्थात् सुनने के लिए भी तो पीने के लिए भी)। मैं ज्ञानामृत का प्रारंभ से ही पाठक भी हूँ, लेखक भी। एक ज्ञानामृत को 15 लोगों को पढ़ाता हूँ। पहले स्कूल स्टॉफ के 300 सहयोगियों को पढ़कर सुनाया करता था। जो लोग ईश्वरीय ज्ञान को नहीं समझते, ''ज्ञानामृत'' उनके लिए भी 'रामबाण' का काम करती है। कितनी ही आत्माएँ बिना सप्ताह का कोर्स किए इसी से बी.के.बन गए। यह हर मर्ज की दवा है।

➢ ब्र.कु.मुरारीलाल त्यागी (सम्पादक, कल्पान्त), केशवपुरम, दिल्ली

## कर्मों में श्रेष्ठता आई

ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने से मेरे जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। जीवन खुशियों से भर गया। जीवन जीने का नज़रिया बदल गया। कर्मों में श्रेष्ठता आई। हर कर्म करते हुए आनंद का अनुभव होने लगा। जो कर्म पहले बोझ लगते थे वो सरल लगने लगे। कर्म करने की क्वालिटी पहले से बेहतर हो गई। धीरे-धीरे यह पत्रिका जीवन की सभी समस्याओं का समाधान देने लगी। पाँचों विकार धीरे-धीरे दूर होने लगे रात्रि में सोने से पहले इसे पढ़कर सोता हूँ तो नींद अच्छी आती है और सुबह अपने-आप को ऊर्जा से भरपूर पाता हूँ। सम्पादक और प्यारे बाबा को दिल से शुक्रिया जो इस पत्रिका के माध्यम से नये युग की स्थापना और मानव में देवत्व उदय करने का कार्य कर रहे हैं।

➢ **शिक्षक देवेन्द्र सिंह, नरेला**

50 स्वर्ण जयन्ती

## शुभकामना संदेश

मुझे ज्ञात हुआ है कि ज्ञानामृत मासिक पत्रिका के स्वर्ण जयंती वर्ष पर एक विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। किसी भी पत्रिका का 50 वर्ष चलना एक विशेष उपलब्धि तथा लंबी यात्रा है। इससे सिद्ध होता है कि यह पत्रिका बहुत ही लोकप्रिय है। मुझे याद है, आदरणीय भ्राता जगदीश चन्द्र हसीजा जी ने बाबा-मम्मा के समय उनके आदेशानुसार इस पत्रिका की शुरूआत की। यह पत्रिका अपने आप में ईश्वरीय अलौकिक शिक्षा एवं मानव कल्याण के लिए महत्वपूर्ण संदेश का माध्यम बनी है। यह पत्रिका इस संस्था के स्थापक शिवबाबा एवं ब्रह्मा बाबा द्वारा दी गई मूल्याधारित शिक्षाओं को हरेक के मानस पटल पर अंकित करने में सफल रही है। मालूम हुआ है कि लगभग सवा तीन लाख पत्रिकाएँ प्रति मास छपती हैं। मुझे आशा ही नहीं, विश्वास है कि आगे चलकर इसकी पाँच लाख प्रतियाँ छापनी पड़ेंगी।

शुरूआत में अकेले भ्राता जगदीश जी ने अनेक ईश्वरीय जवाबदारियों के साथ-साथ कठिन परिस्थितियों में इसके संपादन, लेखन, मुद्रण, प्रकाशन एवं वितरण आदि सारे कार्यों को स्वयं करके इसे आगे बढ़ाया। अपनी तबीयत व अन्य असुविधा को भी ना देखते हुए ईश्वरीय ज्ञान और सेवाओं को इस पत्रिका के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। इस स्वर्णिम अवसर पर भ्राता जगदीश जी को हमारा शत-शत प्रणाम!

इस संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी इस पत्रिका को पढ़कर बहुत प्रसन्न होती थीं और अपनी सेवा-यात्रा में इसे साथ लेकर चलती थी। विभिन्न विषयों पर प्रकाशित इसके लेखों को पढ़कर अपने प्रवचन में भी इसका जिक्र करती थी। वर्तमान समय मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी और अन्य लोग भी इसकी सराहना करते हैं और अपने मंतव्य को इस पत्रिका के माध्यम द्वारा लेखन के रूप में दर्शाते हैं।

ज्ञानामृत पत्रिका में अनेक भाई-बहनों के जीवन-परिवर्तन के वृत्तांत भी प्रकाशित होते हैं। इन्हें पढ़कर अनेक लोगों को प्रेरणा मिलती है तथा स्वयं में और ईश्वरीय कार्य में विश्वास एवं दृढ़ता बढ़ती है। यह खुद का व अनेक आत्माओं का भाग्य बनाने की विधि है।

वर्तमान समय ज्ञानामृत के संपादक आदरणीय भ्राता आत्म प्रकाश जी, उर्मिला बहन और ज्ञानामृत प्रेस के उनके साथी भाई-बहनें इसका विस्तार करते हुए इस ईश्वरीय कार्य को दृढ़ता एवं निष्ठापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं। यह पत्रिका इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शान एवं पहचान है। आपको स्वर्ण जयंती की कोटि-कोटि बधाइयाँ!

**ब्रह्माकुमार मृत्युंजय**
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़
तथा उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

**मेरी अनुभूतियाँ**

### तैंतीस करोड़ देवों के निर्माण में सहभागी

जब हम ज्ञानामृत पत्रिका के लेख पढ़ते हैं तो आभास होता है कि ये हमें समझाने के लिए नहीं बल्कि नर से नारायण बनाने के लिए हैं। श्रीमद्भगवद् गीता में कहा गया है कि विष्णो: पदं अवाप्नोति भय शोकादि वर्जित: अर्थात् इस ज्ञान से भय और शोक से रहित विष्णु पद प्राप्त होता है। ज्ञानामृत पत्रिका के पाठक को यह सहज ही अनुभव होता है कि वह धीरे-धीरे जीवन में आने वाले विघ्नों और दुखों से दूर होता जा रहा है और सुख, शान्ति, पवित्रता, शक्ति, आनन्द आदि जीवन के अंग बनते जा रहे हैं। ज्ञानामृत लाखों-करोड़ों को मिले और तैंतीस करोड़ देवताओं के निर्माण में यह सहभागी बने, इसी शुभ आशा के साथ पत्रिका की स्वर्णिम जयन्ती की बहुत-बहुत मुबारक।

➢ ब्र.कु.प्रेम, गुलबर्गा

## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पहली हिन्दी मासिक पत्रिका ज्ञानामृत के प्रकाशन के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। ज्ञानामृत को यह विलक्षण गौरव प्राप्त है कि इसकी स्थापना स्वयं प्रजापिता ब्रह्माबाबा एवं मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी के साक्षात् मार्गदर्शन में हुई है। आध्यात्मिक क्रांति की मशाल ज्ञानामृत, अवश्य ही सम्पूर्ण विश्व के गगन को आलोकित कर रही है। पचास वर्षों की अनवरत सफल यात्रा कर स्वर्ण जयंती के इस मुकाम तक पहुंचने का समस्त ज्ञानामृत परिवार को बहुत-बहुत अभिवादन स्वीकार हो।

सामग्री संकलन, संपादन, मुद्रण एवं लेखन आदि का कुशल प्रबंधन हर माह नियमित समय पर सम्पन्न करना जटिल कार्य है जो कि आप सभी के भागीरथ प्रयास से संभव हो रहा है। अध्यात्म जैसे गूढ़ व गंभीर विषय को सरलता से पाठकों के सामने प्रस्तुत कर देना ज्ञानामृत की खासियत रही है। भविष्य में भी लाखों-करोड़ों आत्माओं के जीवन में ज्ञान प्रकाश फैला कर दिन दूनी, रात चौगुनी वृद्धि को प्राप्त होती रहे, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद एवं बधाई।

भ्राता ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश जी, ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन एवं ज्ञानामृत परिवार के सभी साथियों को इस शुभ अवसर पर विशेष लाख-लाख बधाइयां एवं मंगल कामनायें।

**ब्रह्माकुमार ओम प्रकाश 'भाईजी'**
क्षेत्रीय निदेशक, इंदौर जोन,
इंदौर (म.प्र.)

**मेरी अनुभूतियाँ**

## 'ज्ञानामृत' ने बनाया गोल्ड मेडलिस्ट

मैं ज्ञानामृत पत्रिका का बहुत आभारी हूँ, सन् 2005 से बाबा के ज्ञान में चल रहा हूँ। ईश्वरीय ज्ञान में आने से पूर्व मैं दुखी रहता था, परिवार में बहुत अशांति थी। मेरा बेटा पढ़ाई में बहुत कमज़ोर था, संस्कार भी चंचलता के थे। मैं चाहकर भी उसे बदल नहीं पा रहा था। जब मैं ज्ञान में आया तो मुझे कहा गया कि आप ज्ञान का दान करें तो यह कष्ट खत्म हो जायेगा। अत: मैंने ज्ञानामृत पत्रिका लेकर साथियों को देना शुरू किया। दो वर्षों के अन्दर पुत्र में सुधार नज़र आने लगा। वह खुद भी यह पत्रिका पढ़ने लगा तथा बाबा को याद भी करने लगा। इस आधार पर बार-बार फेल होने के बदले उसकी बुद्धि एकाग्र होने लगी। इतना ही नहीं, वह इतना कुशाग्र बुद्धि हो गया कि सन् 2007 में उसने यूनिवर्सिटी में टॉप कर गोल्ड मेडलिस्ट होने का गौरव हासिल किया। इसके बाद भी कई प्रतियोगिताओं में चयनित हुआ और आगे बढ़ता गया। वर्तमान में वह असिस्टेंट कमाण्डेन्ट के रूप में उत्तराखण्ड में अपनी सेवाएँ दे रहा है।

प्यारे बाबा की अमृत पिलाने वाली ज्ञानामृत को बार-बार शुक्रिया जो उसने मेरे जैसे लाखों परिवारों को खुशियों से भरपूर किया। प्यारे बाबा, आपकी इस पत्रिका की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है।

➢ **ब्रह्माकुमार एस.के.शर्मा,**
स्टेशन मास्टर, रीवा

## शुभकामना संदेश

ज्ञानामृत पत्रिका के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर पत्रिका के प्रति हार्दिक बधाई और कृतज्ञता प्रगट करता हूँ।

वर्तमान समय एक ओर जहाँ मानव मन में विकृति उत्पन्न करने वाली, देह भान को बढ़ावा देने वाली पत्रिकाओं का प्रचलन आम बात हो गई है वहाँ स्वच्छ, निर्मल आध्यात्मिक साहित्य से ओतप्रोत ज्ञानामृत पत्रिका समाज में आध्यात्मिक क्रान्ति लाने के कार्य में अहम भूमिका निभा रही है।

यही एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसे पढ़कर बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी दिव्य जीवन बनाने की प्रेरणा लेते रहते हैं। इस का हर स्तंभ चाहे वह 'संजय की कलम से' हो या ब्र.कु.रमेश भाई के अनुभवों से भरा लेख हो या फिर दादी जी से पूछे गये सवाल और उनके जवाब हों, सभी ज्ञान के खजाने से परिपूर्ण होते हैं। नाटक, कविता के साथ-साथ अध्यात्म पथ पर चल रहे भाई-बहनों के अनुभव जितने प्रेरणादायक होते हैं उतने ही सचित्र सेवा समाचार भी ज्ञानामृत को चार चाँद लगा देते हैं। मेरे जैसे अनेक ब्रह्मावत्स जो बचपन से ही ज्ञान में चल रहे हैं, उनके जीवन को दिशा देने का और आध्यात्मिक पथ पर बने रहने की प्रेरणा देने का श्रेय ज्ञानामृत को ही जाता है।

आज भी व्यक्तिगत रूप से मैं ज्ञानामृत के अमृतोपदेश से लाभान्वित होता ही हूँ पर ग्लोबल अस्पताल की सेवाओं के समाचार को जन-जन तक पहुँचाने में भी ज्ञानामृत का बहुत सहयोग रहता है।

ऐसी हम सबकी प्रिय ज्ञानामृत पत्रिका के संपादक आदरणीय भ्राता आत्मप्रकाश भाई जी, उर्मिला बहन जी तथा उनकी सहयोगी टीम को मैं तहे दिल से स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आने वाले वर्षों में ज्ञानामृत यूँ ही हमें ज्ञान स्नान कराती रहेगी और हमारे आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी मददगार बनेगी।

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर कोटि-कोटि बधाई।

**ब्रह्माकुमार डा.प्रताप मिड्ढा**
निदेशक, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउण्ट आबू, आबू रोड

वाह ज्ञानामृत वाह

## ज्ञानामृत है ज्ञान की धारा

ज्ञानामृत है ज्ञान की धारा
सबका ज्ञान बढ़ाये।
मधुर-मधुर, पावन शिक्षा से
जीवन दिव्य बनाये।।

ब्रह्मावत्सों की कलम से निकली
दिव्य, मनोहर वाणी।
पढ़कर पाठकगण की
बदल गयी जिन्दगानी।।

जिनके पास ये पत्रिका जाती
वह घर मंदिर बन जाता है।
आधुनिक युग की इस गीता से
दिल गद्गद् हो जाता है।।

महिमा इसकी क्या लिखूँ
लिखने को वो शब्द नहीं।
जो पढ़े वो अनुभव करे
ऐसी पत्रिका और कहीं उपलब्ध नहीं।।

चहूँ ओर बर्बादी को देखकर
लोगों के दिल में बने थे घाव सभी।
लेकिन डूबते को मिल गया किनारा
ज्ञानामृत है वो नाव अभी।।

ज्ञानामृत के हर शब्द में
जीवन का रहस्य होता है।
धारण करे जो उन बातों को
वो प्रभु प्रेम में दिल भिगोता है।।

**ब्रह्माकुमार राजेश गुप्ता,**
रायपुर (छ.ग.)

## शुभकामना संदेश

''ज्ञानामृत'' मासिक पत्रिका ने जन मानस को ज्ञान से समृद्ध किया है और आत्म जागृति का अद्भुत संदेश सारगर्भित लेखों द्वारा दिया है। विगत वर्षों में लाखों की संख्या में प्रकाशन इसकी लोकप्रियता तथा प्रगति को सिद्ध करता है।

सरल, सहज, सुरुचिपूर्ण पत्रिका प्रगति पथ पर बढ़ती हुई स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश कर रही है। हमारी हार्दिक शुभ कामना है कि इसी क्रम में यह प्लेटिनम जुबली वर्ष में भी प्रवेश करे!

**ब्रह्माकुमारी सरला, अहमदाबाद**
क्षेत्रीय संचालिका, गुजरात जोन

वाह ज्ञानामृत वाह

## विश्व की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

**– डॉ. ए.के. मिश्रा, डेंटल सर्जन, रीवा**

मैं पिछले 25 वर्षों से बाबा की ज्ञानामृत पत्रिका का सदस्य हूँ। लायन्स क्लब का 45 वर्षों से सदस्य हूँ जिससे सभी प्रकार की सामाजिक सेवाएँ करने का अवसर मिला है लेकिन जो सेवा ब्रह्माकुमारी बहनें करती हैं उसकी मिसाल अन्यत्र कहीं भी संभव नहीं है।

इस पत्रिका में जो बातें मुझे अच्छी लगती हैं उनको यदि क्रमबद्ध रूप में कहूँ तो संख्या ज्यादा हो सकती है लेकिन मुख्य 5 बातों से यह पत्रिका विश्व की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है।

प्रथम, यही एक ऐसी परमात्मा की संदेशवाहिनी पत्रिका है जिसमें आत्मा और परमात्मा का सत्य ज्ञान अनुभूतियों के साथ दिया जाता है। दूसरा, यही एक ऐसी मनभावन पत्रिका है जिसे पढ़ने से मन प्रभु-प्रेम में पग जाता है, आत्मा परमात्मा के प्रति निकटता का अनुभव करती है। तीसरा, यह पत्रिका एक ऐसी औषधि का कार्य करती है जिससे अशांति व तनाव जैसे रोग सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं। यह पत्रिका, पथ प्रदर्शक की भांति मार्गदर्शन देकर समस्याओं का निवारण कर देती है। चौथी बात, वर्तमान समय एक वैश्विक समस्या है, वर्गवाद-जातिवाद। कई प्रकार के वादों-प्रतिवादों से मानव दुखी हो रहा है। ऐसे में यह पत्रिका हर मानव को बिना भेदभाव के ''हम एक हैं, एक पिता की संतान हैं और आपस में भाई-भाई हैं'' ऐसा स्नेहमय मंत्र देकर सबको परस्पर प्रेम के धागों में पिरोने का महानतम कार्य कर रही है। मेरा मानना है यह एक क्रांतिकारी कार्य है जिससे समस्त धर्म वाले इस पत्रिका को नमन करते हैं। पांचवीं बात, जीवन का अंतिम लक्ष्य बताने में कोई भी संस्था या गुरु आज सक्षम नहीं है। आज जय-जयकार और दूसरे दिन गिरावट के दौर में गुरु व संस्थाएँ जा रही हैं। ऐसे समय में जीवन का शाश्वत सत्य यह संस्था अपनी पत्रिका ज्ञानामृत द्वारा उद्घोषित कर रही है कि नवयुग का अरुणोदय हो रहा है। सारा विश्व भयभीत है अणुबम और पर्यावरण प्रदूषण द्वारा पृथ्वी के अंत की ओर जाने से लेकिन शुक्र है इस पत्रिका के चुनौतीपूर्ण, तथ्यपरक लेखों का जो आने वाले सुखमय काल के रहस्यों का उद्घाटन कर हर मानव को अति सुकून देते हैं। मेरा मानना है कि भयाक्रांत मानवता को ज्ञान तथा धैर्य देने के लिए पत्रिका व इसके संपादकीय प्रमुखों को जितना साधुवाद दिया जाए कम है। अंत में मैं अपनी बातों को इन पंक्तियों से समाप्त करता हूँ -

जो चाह थी वह मिल गई, ज्ञानामृत को प्राप्त कर,
नहीं आस है कोई बची, बाबा के ज्ञान को पाकर,
शाश्वत रहे शिखरों पे ये बाबा की पत्रिका,
भारत नहीं भू-मण्डल में पहुँचे ज्ञानामृत पत्रिका।।

## शुभकामना संदेश

हमें यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञानामृत पत्रिका अपनी स्वर्ण जयंती मना रही है। ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश जी तथा उनके सहयोगी-साथी कितने अथक, ऊर्जावान एवं सफलता स्वरूप हैं, इसका प्रतीक यह स्वर्ण जयंती है।

हमारे प्रिय आदरणीय भ्राता जगदीशचंद्र, जो कि प्रथम संपादक रहे हैं, उनके विचार अभी भी ''संजय की कलम से'' प्रकाशित होते हैं, जो ज्ञान के गुह्य राज़ों को स्पष्ट करते हैं।

ज्ञानामृत पत्रिका में विविध विषयों पर सामग्री प्राप्त होती है जो शिक्षाप्रद, मार्गदर्शक एवं प्रेरणादायक होती है। सचित्र सेवा समाचार उमंग-उत्साह बढ़ाते हैं।

मेरी शुभभावना तथा शुभकामना है कि ज्ञानामृत पत्रिका की लोकप्रियता और बढ़े तथा पाठक अपना जीवन सुखमय बनाएँ।

**ब्रह्माकुमारी संतोष, मुंबई (सायन)**

क्षेत्रीय संचालिका – महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश क्षेत्र

वाह ज्ञानामृत वाह

## 'ज्ञानामृत' का जवाब नहीं!

मैंने ईश्वरीय ज्ञान के करीब तीन सालों के अनुभव में पाया है कि भगवान द्वारा बताये गये ज्ञान-बिन्दुओं को जीवन में धारण करने के लिए, अपना पुरुषार्थ निरंतर बनाये रखने के लिए और अपना अकेलापन समाप्त करने के लिए ज्ञानामृत मासिक पत्रिका बहुत ही उपयोगी साबित हो रही है। कई बार मन में चल रहे प्रश्नों के उत्तर ज्ञानामृत में उदाहरण सहित मिल जाते हैं। धन्य हैं ज्ञानामृत बनाने वाले और उसके लिए लिखने वाले भाई-बहनें। मैं पेशे से एक डॉक्टर हूँ और सरस्वती मेडिकल कॉलेज (पिलखुवा, उत्तर प्रदेश) में एसोसिएट प्रोफेसर (सह-प्राध्यापक) की हैसियत से कार्यरत हूँ।

➢ **ब्रह्माकुमार डॉ.गौरव अग्रवाल,**
दिलशाद गार्डन, दिल्ली

## 'गुडन्यूज' देने वाली

''ज्ञानामृत'' पत्रिका अव्यक्त पालना में आगे बढ़ने वाले बच्चों के लिए संजीवनी बूटी का काम कर रही है। ज्ञान मुरली के साथ-साथ ''ज्ञानामृत'' बुद्धि के लिए लाजवाब भोजन है। इस अमृतरस का पान कर बुद्धि दिव्यता की ऊँचाई को सहज प्राप्त कर लेती है। न सिर्फ ब्रह्मावत्स बल्कि नये जिज्ञासुओं को भी प्रेरणा देती है। इस दुखदायी दुनिया में दुख के समाचार रोज़ सुनते-पढ़ते लोगों के लिए ''ज्ञानामृत'' ज्ञानदान के साथ-साथ ''गुड न्यूज़'' देते हुए सभी का जीवन सुखदायी बना रही है। इसके पाठक और भी बढ़ते जाएँ, ऐसी बहुत-बहुत दिल की दुआओं सहित सभी को बधाई।

जन-जन तक पहुँचाये प्रभु संदेश,
जन-जन तक पहुँचाये प्रभु प्यार,
दुखियों के जीवन की संजीवनी,
ज्ञानामृत है प्रभु का उपहार।

➢ **ब्रह्माकुमारी शकु बहन, मुम्बई (डोंबिवली)**

## शुभकामना संदेश

अति प्यारे-मीठे बापदादा की प्रेरणा से पल रही ''ज्ञानामृत'' पत्रिका के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर सम्पादक तथा उनकी टीम को बहुत-बहुत बधाई हो!

हर मन को पावन करने वाली, ज्ञान खज़ानों से सम्पन्न, मन में नयी चेतना, उमंग-उत्साह भरने वाली ''ज्ञानामृत पत्रिका'' का हम सभी को सदा ही इंतजार रहता है। इसमें आने वाले लेख आत्मा में अद्भुत शान्ति का संचार करते हैं। हर लेख अपने आप में विशेष शिक्षा लिए हुए होता है। 'संजय की कलम से' पढ़ते-पढ़ते हम साकार बाबा से जुड़ जाते हैं। दादी जानकी जी के प्रश्नोत्तर बाबा की समीपता का अनुभव कराते हैं एवम् यज्ञ की मर्यादा-नियम से हमें अवगत कराते हैं, जिससे अव्यक्त पालना लेने वाले बापदादा के बच्चों को आगे बढ़ने में बहुत अच्छी मदद मिलती रहती है।

छोटी-छोटी कविताएँ भी मन को छू जाती हैं। पत्रिका के हर पन्ने पर जो सुविचार लिखे जाते हैं वे पत्रिका को और भी शोभनिक बनाते हैं। ''ज्ञानामृत'' पढ़ते-पढ़ते दिल से सदा ही निकलता है, वाह बाबा वाह! वाह ज्ञानामृत वाह!! इसकी महिमा में चंद पंक्तियाँ कहना चाहूँगी –

मन को पावन करती,
ज्ञान रंगों से हम सबको रंगती,
दिव्यता से जीवन सवाँरती,
ओहो! 'ज्ञानामृत' तुम तो
सबको अति भाती, अति भाती।

''ज्ञानामृत पत्रिका'' सदा ही सर्व आत्माओं को अमृत से पावन बनाती रहे, ज्ञानामृत का रसपान कर हर आत्मा तृप्त होती रहे तथा ज्ञान शृंगार कर सतयुग की तरफ कदम बढ़ाती जाये, ऐसी बहुत-बहुत शुभकामना एवम् बधाई।

**ब्रह्माकुमारी नलिनी बहन,**
क्षेत्रीय संचालिका, घाटकोपर क्षेत्र, मुम्बई

**मेरी अनुभूतियाँ**

## 'ज्ञानामृत' ने मिलाया मुझे ज्ञान सागर से

सन् 1998 के पूर्व मेरे जीवन में बहुत अशान्ति व परेशानी रहती थी। पान, तम्बाकू का सेवन करना तो मेरे जीवन का शौक बन गया था। ''ज्ञानामृत पत्रिका'' तो लेता रहा परन्तु पढ़ता नहीं था। एक दिन ब्रह्माकुमारी बहन जी ने पत्रिका देते ही पूछा, क्या आपने पिछले महीने के लेख पढ़े? मैंने सीधा मना किया कि मेरे पास इतना समय नहीं है। तब बहन जी ने वहीं पर खड़े होकर जीवन परिवर्तन का एक लेख सुनाना शुरू कर दिया। लेख सुनकर मेरे अन्दर रोमांच खड़े हो गए कि ऐसा परिवर्तन तो मेरे जीवन में भी आ सकता है। परिवर्तन का दृढ़ संकल्प लेकर मैं बहन जी के कहने पर माउण्ट आबू गया। वहाँ की निराली छटा देखते ही बनती है। वहाँ पहुँचकर मैं अपने आप को जैसे भूल-सा गया। मेरा मन जीवन को श्रेष्ठ बनाने एवं आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए वहीं पर संकल्पित हो गया। मधुबन से वापस लौट कर प्रतिदिन सत्संग शुरू किया तो लगने लगा जैसे कोई मुझे खींच रहा है, मेरी आन्तरिक शक्तियाँ बढ़ रही हैं। मुरली सुनते ही जीवन में नियमों व संयम की धारणा सहज होने लगी। तब से मैं और मेरी युगल (सावित्री) मुरली सुनने रोज़ाना सेन्टर पर जाने लगे। कई ऐसी परिस्थितियाँ जीवन में आयीं जिनमें प्यारे बाबा की मुरली ने योगयुक्त बनाकर विजयी बनाया। मुरली सुनते वक्त ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे पिता अपने बच्चे को समझा रहे हैं। दिल में अब यही संकल्प रहता है कि जब तक जीना है, ज्ञानामृत पीना है।

➢ **ब्रह्माकुमार भारत प्रसाद ताम्रकार, रीवा**

50 स्वर्ण जयन्ती

## शुभकामना संदेश

ज्ञानामृत पत्रिका के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश करने पर मुझे अपार हर्ष व गौरव का अनुभव हो रहा है। मेरा इस पत्रिका से तब से सम्बन्ध रहा है जब यह त्रिमूर्ति नाम से छपती थी तथा आदरणीय जगदीश भाई जी इसका सम्पादन किया करते थे। मुझे याद आता है कि तब पिताश्री प्रजापिता साकार ब्रह्मा बाबा भी इसे पढ़कर समय प्रति समय इसके उत्थान और प्रगति के लिए मार्ग प्रदर्शना करते रहते थे। अभी भी यह परम्परा चली आ रही है तथा आदरणीया दादी जानकी जी भी इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रगट करती रहती हैं। जहाँ बड़ों की दुआएँ व आशीर्वाद हैं वहाँ सफलता निश्चित है। पत्रिका में बहुत ही सारगर्भित लेख, अनुभव, कविताएं, सेवा समाचार (विशेषकर चित्रों के माध्यम से) तथा सम्पादकीय आदि अधिक, और अधिक पढ़ने के लिए प्रेरणा देते हैं।

पचास वर्ष के इस सफल सफर पर मैं ज्ञानामृत सम्पादक मंडल को, विशेषकर भ्राता आत्म प्रकाश जी तथा बहन उर्मिला जी को हार्दिक बधाइयाँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि आने वाले समय में दिन दूनी-रात चौगुनी प्रगति करके यह बाबा का और यज्ञ का नाम रोशन करेगी तथा इसके नाम के आगे एक और विशेषण जुड़ जायेगा— **वाह ज्ञानामृत वाह**!

एक बार पुन: ज्ञानामृत की सेवा में रत सभी सेवाधारी भाई-बहनों को बहुत-बहुत शुभ कामनाएं एवं हार्दिक बधाइयाँ।

**ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल**
राष्ट्रीय संयोजक,
साइन्टिस्ट और इन्जीनियर प्रभाग

## मेरी अनुभूतियाँ

### हर लेख अमूल्य

ज्ञानामृत एक ऐसी पत्रिका है जिस द्वारा विश्व के विभिन्न देशों के भाई-बहनों के अनुभवों तथा विचारों का लाभ ले सकते हैं। इसका एक-एक लेख अति अमूल्य है जिस द्वारा अति गुह्य आध्यात्मिक ज्ञान, योग, अनुभव तथा सामाजिक, वैज्ञानिक....हर क्षेत्र की जानकारी मिलती है। कई लेख ऐसे होते हैं जिन्हें पढ़कर दिल करता है कि अलग से छपवा कर सबको बाँटूँ। आध्यात्मिक प्रगति के लिए 'ज्ञानामृत' सभी भाई-बहनों को ज़रूर पढ़नी चाहिए।

➢ **ब्रह्माकुमार राजूभाई, पाण्डव भवन**

### अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर मिले

ज्ञानामृत पत्रिका स्वर्ण जयन्ती वर्ष मना रही है, यह समाचार सुनकर अपार खुशी हुई। इस स्वर्णिम सफर की कोटि-कोटि बधाइयाँ। विगत 26 वर्षों से, जब से ईश्वरीय ज्ञान मार्ग में आया, ज्ञानामृत ने मेरा बहुत अच्छा मार्गदर्शन किया। कई अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर, वरिष्ठ भाइयों एवं बहनों के लेखों द्वारा स्पष्ट हुए और ज्ञान के नये-नये आयामों को समझ सका। मैं इसका अध्ययन कर निरन्तर लाभान्वित होता हूँ और ज्ञानामृत के सदस्यों की वृद्धि करने में भी निरन्तर प्रयासरत रहता हूँ। यह पत्रिका और भी अधिक सफलता की ऊँचाइयों पर पहुँचे, मानवता की सेवा करती रहे, यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

➢ **ब्रह्माकुमार कृष्ण अग्रवाल, समस्तीपुर**

## शुभकामना संदेश

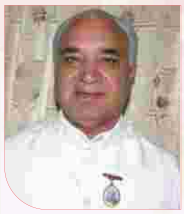

मुझे यह जानकर अति हर्षोल्लास हो रहा है कि ज्ञानामृत पत्रिका सफलता की बुलन्दियों को छूते हुए इस वर्ष अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रही है। ज्ञान की गहराई और महीनता को लिए हुए लेख तथा ज्ञान को जीवन में उतारने से आए सकारात्मक परिवर्तन के अद्‌भुत संस्मरण पत्रिका की एक अलग पहचान बनाते हैं। प्राण प्यारे साकार ब्रह्मा बाबा व शिव बाबा की प्रेरणाओं से आरम्भ हुई इस पत्रिका ने देश-विदेश में लाखों लोगों के जीवन में ज्ञान की सरिता बहाकर उन्हें श्रेष्ठ चिन्तन, अध्ययन व मनन की ओर प्रवृत्त करके उन्हें सशक्त करने में महत्वपूर्ण व सराहनीय कार्य किया है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर हो रही आध्यात्मिक व सामाजिक सेवाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए भी यह एक सशक्त माध्यम बनी है। जीवन में आने वाली समस्याओं को हल करने व चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणाएँ व युक्तियाँ इसमें छपने वाले लेखों द्वारा सहज ही प्राप्त होती हैं।

पत्रिका की लोकप्रियता व उपयोगिता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि ज्ञान में रुचि रखने वाले नये-पुराने सभी ब्रह्मावत्सों को ज्ञानामृत के आने का बेसब्री से इंतजार रहता है और ज्यादातर भाई-बहनें इसके पुराने अंकों को भी सम्भाल कर रखते हैं। पत्रिका को आरम्भ करने से लेकर कई दशकों तक सम्पादन करने वाले आदरणीय जगदीश भाई के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। इस अवसर पर मैं पत्रिका को रोचक व आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत करने वाले सम्पादक, प्रकाशक, लेखक, डिज़ाइनर व पोस्टिंग से जुड़े सभी भाई-बहनों की टीम का हार्दिक अभिवादन करता हूँ और उनकी नि:स्वार्थ सेवाओं की सच्चे दिल से प्रशंसा करता हूँ। मेरी हार्दिक शुभकामना व पूरा विश्वास है कि ज्ञानामृत पत्रिका आने वाले समय में करोड़ों घरों तक पहुँच कर ईश्वरीय ज्ञान को प्रत्यक्ष करने और दैवी दुनिया के निर्माण में निमित्त बनेगी।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

**ब्रह्माकुमार अमीरचन्द भाई**

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, समाज सेवा प्रभाग

वाह ज्ञानामृत वाह

## भारत रामराज्य बन जाएगा

आज से तीस वर्ष पहले जब ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ना शुरू किया, तब से कोई भी ज्ञानामृत ऐसी नहीं जिसे कम से कम दो बार नहीं पढ़ा हो। साथ ही पुरानी जितनी भी ज्ञानामृत मिली, उनको पढ़कर जीवन में अपार हर्ष का अनुभव किया। मुझे तो अनुभव होता है कि हर भारतीय घर में यदि 'ज्ञानामृत' पुस्तक का अध्ययन किया जाये तो हर घर खुशियों से भरपूर हो जायेगा और सहज ही भारत फिर से रामराज्य में बदल जायेगा। ज्ञानामृत सरल शब्दों में गीता का सत्य सार है। इसमें ज्ञान-स्नान कर मैं अपने आपको पावन, निर्मल महसूस करता हूँ। ऐसी मीठी पत्रिका के आने का इंतजार रहता है और जब मिल जाती है तो खुशी का अनुभव होता है क्योंकि यह ऐसा सुपाच्य, श्रेष्ठ आहार है जो आत्मा को तृप्त कर देता है। अंत में यही कहूँगा –

''वाह ज्ञानामृत वाह, तेरी हर बात निराली,
पहुँचे जिसके पास, छा जाती खुशहाली।''

स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर ज्ञानामृत परिवार को ढेर सारी हार्दिक बधाइयाँ।

➢ **ब्र.कु. शिवकुमार,**
बी.के.कालोनी, शान्तिवन